पुस्तक अनुवीक्षा

पचरंग चोला पहर सखी री : माधव हाड़ा

स्वतं प्रकाश

पुरखों का स्मरण

लोक में प्रचलित देवी-देवताओं की छवि कैसी है? किसी के चार हाथ हैं तो किसी के चार सिर, कोई शेर पर सवार है तो कोई चूहे पर और हर एक के हाथ में ढेरों अस्त्र-शस्त्र हैं। इसका क्या मतलब है? इसका सीधा-सा मतलब यह है कि जिसे प्रबल पराक्रमी बताना हुआ, उसके दो की बजाय चार हाथ बना दिए और जिसे परम बुद्धिमान और त्रिकालदर्शी दिखाना हुआ, उसके चार सिर बना दिए और भक्तवत्सल, खल संहारी और दु:खविनाशक तो सभी हैं। उनके हथियार दुष्टों के दमन के लिए हैं, यह प्रतीक योजना है। और किसी के गुणों के प्रकाश की बहुत सुंदर प्रतीक योजना है, लेकिन कालांतर में हम प्रतीकों को ही सच मानने लग सकते हैं और उनके पीछे छिपे अर्थों को विस्मृत करने लगते हैं। प्रतीकों में यही ख़तरा है।

लोक-स्मृति की शैली है मिथकीकरण। हमारा इतिहास लेखन इसी शैली का अनुकरण करता है। समय की हमारी अवधारणा एकरेखीय नहीं, चक्राकार है। कहीं कोई क़यामत का दिन नहीं है। जो हुआ है, पुनि-पुनि होता है। इसी शैली में हमने अपने मध्ययुगीन नायकों-नायिकाओं का मिथकीकरण किया है। राणा प्रताप, शिवाजी और छत्रसाल, बंदा बैरागी, गुरु गोविंदसिंह और दुर्गावती। संतों, भक्तों और साहित्यकारों को भी लोक-स्मृति ने इसी तरह संजोया। कबीर विधवा ब्राह्मणी के बेटे थे और लहरतारा की सीढ़ियों पर संत रामानुज के पैरों में आ गए थे। तुलसीदास तूफ़ानी रात में रत्नावली से मिलने पहुँच गए थे और साँप को रस्सी समझकर चढ़ गए थे। नानक

स्वयं प्रकाश। जन्म : 1947। वरिष्ठ कहानीकार। *सूरज कब निकलेगा, आएँगे अच्छे दिन भी* चर्चित पुस्तकें। पहल सम्मान तथा राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत। संपर्क : 3/33, ग्रीन सिटी, ई-8, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462099 (म.प्र.)

ने सारा खेत रखवाली करते समय चिड़ियों को चुगा दिया था, नरसी भगत का मायरा भरने स्वयं साँवरिया सेठ अर्थात् कृष्ण आए थे आदि आदि।

और इस मिथकीकरण का सबसे बड़ा प्रमाण है मीरा, जिसके कृतित्व और व्यक्तित्व ही नहीं, नाम तक के बारे में हम पक्का नहीं जानते कि यह 'मीरा' था या 'मीरां'! इसका कारण सिर्फ़ यह नहीं है कि हमारे यहाँ इतिहास लेखन की परंपरा नहीं है, इसका कारण यह भी है कि यातायात के साधनों के अभाव में राजस्थान शेष दुनिया के लिए एक लंबे समय तक दुर्गम और अबूझ ही बना रहा, आज भी देश के अनेक हिस्सों में लोग राजस्थान को प्रवासी मारवाड़ी व्यापारियों के माध्यम से ही यत्किंचित जानते हैं।

मध्यकालीन संतों-भक्तों में मीरा लगभग एकमात्र महिला थीं और फिर राज परिवार से थीं इसलिए वे न केवल उत्सुकता का कारण बनीं, अपितु मनवांछित आकार-प्रकार प्रदान कर पाने का सुगम माध्यम भी बनीं। मीरा की एक प्रवासी अध्येता परिता मुक्ता ने अपनी पुस्तक में इस पर विस्तार से विचार किया है। मीरा की लोकप्रियता को बढ़ाने और भुनाने में चित्र, कैलेंडर, कैसेट, फिल्म—कोई पीछे नहीं रहा, यहाँ तक कि खिलौने और मूर्ति रूप में भी मीरा एक लोक नायिका बन गईं, लेकिन जैसे-जैसे वे लोक में समाहित हुईं, उनका वास्तविक स्वरूप लुप्त होता गया और इसका स्थान एक काल्पनिक विद्रोहिणी स्त्री ने ले लिया। हमारे समय में स्त्री विमर्श के पैरोकारों को मीरा में अपनी एक जबरदस्त समर्थक नज़र आने लगी और कभी की भक्त और कवयित्री मीरा नारी मुक्ति की नायिका और राज-व्यवस्था से विद्रोह की प्रतिमूर्ति बना दी गई। लेकिन आधुनिक काल में यदि हम मीरा को सचमुच समझना चाहते हैं तो तर्क और विवेकसम्मत वैज्ञानिक दृष्टि के बग़ैर ऐसा करना मुमकिन नहीं हो सकता। इसके लिए यह ज़रूरी है कि आधुनिक काल में मीरा के किसी भी गंभीर अध्येता को अपने काम की शुरुआत भ्रमभंजन (डी मिस्टीफ़िकेशन) से करनी पड़ेगी। और माधव हाड़ा ने अपनी चर्चित पुस्तक *पचरंग चोला पहर सखी री* में ठीक यही किया है।

माधव हाड़ा राजस्थान के ही रहनेवाले हैं और वहाँ के समाज, प्रथा-परंपरा, लोकविश्वास और रूढ़ियों से अच्छी तरह परिचित हैं। उनकी पहली प्रतिज्ञा यह थी कि मीरा को समझने के लिए मीरा के समय और समाज से परिचित होना आवश्यक है। यह अपने आप में मीरा के पूर्व अध्येताओं से बिलकुल भिन्न बात थी और सोचने पर लगता है कि बेशक, इसके बग़ैर किसी भी ऐतिहासिक व्यक्तित्व को कैसे समझा जा सकता है।

लेकिन इस प्रतिज्ञा के पालन के लिए माधव हाड़ा के पास पूँजी क्या थी? सिर्फ़ एक पुस्तक—कर्नल टोंड की चर्चित लेकिन विवादास्पद पुस्तक *एनल्स एंड एक्टिविटीज़ ऑफ़ राजस्थान*। विवादास्पद इसलिए कि जैसे-जैसे लोगों में राजस्थान के बारे में जानकारी बढ़ती गई, कर्नल टोंड द्वारा वर्णित घटनाओं की प्रामाणिकता, निष्पक्षता और सत्यता पर संदेह उत्पन्न होने लगे। बाकी बातों को फिलहाल छोड़ भी दें तो यह देखना दिलचस्प होगा कि कर्नल टोंड मीरा के बारे में क्या कहते हैं, माधव हाड़ा के अनुसार :

"कुल मिलाकर टोंड ने मीरा के संबंध में धारणा बनाई कि असाधारण सौंदर्य और रूमानी भक्ति के कारण वह अपने समय की सर्वाधिक यशस्वी राजकुमारी थी। उसका

इतिहास एक प्रेमाख्यान है। वह उत्कृष्ट कोटि की कवयित्री थी और उसकी कविता जनसाधारण में लोकप्रिय थी। उसने पद-प्रतिष्ठा छोड़कर कृष्ण के मंदिरों की यात्राएँ की। अतिशय भक्ति, नृत्य और देशाटन के कारण समाज में उसके संबंध में कुछ लोकापवाद भी चले। उसके पति और राणा ने उस पर कभी संदेह नहीं किया।''

माधव इसे केननाइज़ेशन कहते हैं। उनका मानना है कि इसके दूरगामी परिणाम निकले।

मीरा के व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन के लिए माधव हाड़ा न सिर्फ़ राजवंशों के ख्यात, बही, वंशावली आदि पारंपरिक इतिहास रूपों का उपयोग करते हैं, अपितु मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट और आर्कियोलॉजिकल सर्वे की रिपोर्ट आदि का भी उपयोग करते हैं।

माधव हाड़ा की इस किताब को पढ़कर सबसे पहले तो पाठक को यह पता चलता है कि राजपूतों के बड़े-बड़े घराने और ठिकाने कौन-कौन से थे और उनकी भौगोलिक, आर्थिक और राजनीतिक अवस्थिति क्या थी। और भी अच्छा होता यदि माधव हाड़ा यहाँ तत्कालीन राजस्थान का एक मानचित्र भी दे देते, जैसा कि कई किताबों में किया जाता है और जो पाठकों के लिए बहुत मददगार साबित होता है।

पुस्तक का पहला अध्याय मीरा के जीवन से संबंधित है और पचास पृष्ठ के इस लंबे अध्याय के अंत में निष्कर्षत: माधव हाड़ा कहते हैं :

''मीरा के संबंध में कई भ्रांतियाँ हैं। वह पगली-दीवानी भक्ति में डूबी स्त्री नहीं थी। उसका लालन-पालन एक स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर और जीवन की उठापटक से अवगत विवेकवान युवती के रूप में हुआ था। वह भगवाधारी, दीन, हीन और असहाय साध्वी भी नहीं थी। उसके पास आर्थिक स्वावलंबन के पारंपरिक प्रावधान थे और उसे मजबूत सामाजिक सुरक्षा प्राप्त थी।''

यहीं से मीरा के बारे में हमारी मूलबद्ध धारणाएँ बदलनी आरंभ हो जाती हैं।

फिर दूसरे अध्याय 'समाज' के निष्कर्ष स्वरूप माधव हाड़ा का मत है कि ''अपनी शर्तों पर अपना जीवन गढ़नेवाली मीरा को सर-आँखों उठाकर चलनेवाला समाज ठहरा हुआ और ठंडा कैसे हो सकता है? यह पर्याप्त गतिशील और द्वंद्वात्मक समाज था, जिसकी निर्भरता केवल धर्म और शास्त्र की बजाय सदियों के अनुभव से बनती-बिगड़ती परंपराओं और मर्यादाओं पर थी।'' यहीं वह यह भी बताते हैं कि ''शासक क्षत्रिय जातीय समूहों के बहन-बेटियों के विवाह राजनैतिक लक्ष्य साधन के लिए होते थे और बहुविवाह प्रथा के कारण उनका दांपत्य जीवन सामान्य नहीं था।'' इसी पृष्ठ पर एक चौंकानेवाला बयान इस तरह है :

''सती प्रथा इस दौरान थी, लेकिन एक तो यह बहुत अधिक व्यापक नहीं थी और दूसरे यह स्वैच्छिक थी।''

तीसरे अध्याय 'धर्माख्यान' में लेखक ने तत्कालीन धार्मिक संप्रदायों के बारे में बताया है और कहा है कि मीरा की भक्ति संप्रदाय निरपेक्ष थी। वह कहते हैं : ''मीरा पारंपरिक और प्रचलित अर्थों में भक्त नहीं थी, लेकिन विभिन्न धर्माख्यानों ने उसके भक्त रूप की प्रतिष्ठा और विस्तार में निर्णायक योग दिया... मीरा के संत-भक्त रूप की प्रतिष्ठा के लिए इनमें उसके

वैयक्तिक जीवन के संघर्ष और दु:ख का आग्रहपूर्वक उदात्तीकरण करके चरित्र को अतिमानवीय रूप दे दिया।''

चौथे अध्याय 'कविता' में निष्कर्ष स्वरूप एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही गई है। लेखक का मानना है कि ''सही बात तो यह है कि मध्यकालीन सामंती व्यवस्था और पितृसत्तात्मक विधि-निषेधों के अधीन अपने लैंगिक नियमन और दमन के विरुद्ध मीरा के आजीवन संघर्ष में भक्ति की भूमिका एक युक्ति या हथियार से ज़्यादा नहीं थी। विडंबना यह है कि उसकी निर्मित और प्रचारित पहचान में स्त्री मनुष्य के रूप में किया गया उसका यह संघर्ष तो हमेशा हाशिये पर रहा है और इसमें बतौर हथियार के रूप में काम में ली गई भक्ति सर्वोपरि हो गई है। मीरा की कविता में उसके स्त्री अस्तित्व के अनुभव और संघर्ष के सभी रूप और लक्षण मौजूद हैं, जो उसकी अब तक निर्मित और प्रचारित संत-भक्त पहचान पर भारी पड़ते हैं।''

अगले अध्याय 'केननाइज़ेशन' में लेखक की मान्यता है कि ''इतिहास में मीरा का प्रचलित और लोकप्रिय रूप पूरी तरह टॉड की निर्मिति है। इस निर्मिति में भारतीय इतिहास की यूरोपीय व्याख्याओं और विश्लेषणों की अलग-अलग विधियों के रुझानों के साझा प्रभाव के साथ टॉड के राजपूताना और यहाँ के सामंतों विषयक व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों का निर्णायक योगदान है। तत्कालीन राजपूताना में टॉड की वर्चस्वकारी हैसियत और वैदुष्य का ही प्रभाव था कि पारंपरिक इतिहास रूपों से लगभग बहिष्कृत मीरा आधुनिक इतिहास में रूमानी और रहस्यवादी संत-भक्त और कवयित्री के रूप में मान्य हो गई।''

अंतिम अध्याय 'छवि निर्माण' में विभिन्न माध्यमों की भूमिका पर विचार किया गया है।